



शुष्क पुष्पों से महकता भविष्य

शुभम राय

बढ़ते शहरीकरण और आधुनिकीकरण के दौर में पुष्पों की खेती आज सबसे लाभकारी कृषि उद्यमों में से एक बन गई है। धार्मिक आयोजनों, शादियों, मदर्स डे, वैलेंटाइन डे और त्योहारों के मौसम में पुष्पों की मांग चरम पर रहती है। किंतु पुष्पों की अत्यधिक नाशवान प्रकृति के कारण इनका एक बड़ा हिस्सा शीघ्र ही मुरझा जाता है, जिससे किसानों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। ऐसे शुष्क पुष्पों का उपयोग कर आकर्षक और महंगे उत्पाद जैसे- बुकमार्क, अभिनंदन कार्ड, पुष्पों की लालटेन, फोटो फ्रेम तथा फूल मोमबत्तियाँ आदि तैयार की जा सकती हैं। इन उत्पादों से न केवल अतिरिक्त आमदनी प्राप्त की जा सकती है बल्कि पुष्पों का समुचित उपयोग भी सुनिश्चित होता है। महिलाएं लघु स्तर पर इस प्रकार का गृह-आधारित उद्यम प्रारंभ कर सकती हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन, महिला सशक्तिकरण और कृषि अपशिष्ट के रचनात्मक उपयोग को बढ़ावा मिलेगा।

फूल मुरझा जाएं, पर उनका मूल्य कभी नहीं घटता। जब शुष्क फूल कला का रूप लेते हैं, तो ये केवल सुंदरता का प्रतीक नहीं रहते, बल्कि आत्मनिर्भरता की राह भी दिखाते हैं। ये फूल रचनात्मकता, आजीविका और सशक्तिकरण का प्रतीक बनकर नई संभावनाओं के द्वार खोलते हैं। विशेष रूप से महिलाओं के लिए यह क्षेत्र आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सशक्त कदम है।

हस्तशिल्प उद्यमों के माध्यम से महिलाएं शुष्क पुष्पों से बुकमार्क, अभिनंदन कार्ड, सजावटी लालटेन, फोटो फ्रेम और मोमबत्तियाँ जैसी आकर्षक वस्तुएं तैयार कर सकती हैं, जिनकी बाजार में अच्छी मांग रहती है।

पुष्प एवं भू-दृश्य विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

शुष्क पुष्पों और पौधों का निर्यात भारत की अर्थव्यवस्था में भी उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। वर्तमान में भारत इस क्षेत्र में अग्रणी देशों में से एक है और अपने शुष्क पुष्पों का लगभग 71 प्रतिशत निर्यात करता है। प्रमुख निर्यात गंतव्यों में अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, रूस और यूरोपीय देश शामिल हैं। भारत से 500 से अधिक प्रजातियों के शुष्क पुष्पों का निर्यात लगभग 20 देशों को किया जाता है, जो न केवल भारतीय कारीगरी की पहचान है बल्कि पर्यावरण-अनुकूल उद्यमों की बढ़ती वैश्विक मांग को भी दर्शाता है।

शुष्क पुष्पों की सजावट के विभिन्न प्रकार

फ्लावर बुकमार्क्स: सपाट और शुष्क पुष्पों को लेमिनेटेड पेपर या कार्ड पर सजाकर आकर्षक बुकमार्क तैयार किए जाते हैं। इन बुकमार्क्स की प्राकृतिक रंगत और सुंदर बनावट इन्हें देखने वाले को तुरंत

शुष्क पुष्पों के लाभ

- **लंबे समय तक टिकाऊ-** शुष्क फूल महीनों या वर्षों तक अपनी सुंदरता बनाए रखते हैं।
- **कम देखभाल की आवश्यकता-** इन्हें पानी देने या विशेष पोषण की जरूरत नहीं होती।
- **पर्यावरण के अनुकूल-** ये पूरी तरह प्राकृतिक होते हैं और कृत्रिम सजावटी सामग्री का विकल्प बनते हैं।
- **आर्थिक रूप से लाभकारी-** ताजा पुष्पों की तुलना में ये सस्ते और हर मौसम में आसानी से उपलब्ध रहते हैं।
- **सुविधाजनक भंडारण-** इन्हें कहीं भी रखा जा सकता है, तापमान या नमी की विशेष चिंता नहीं रहती।

आकर्षित करती है। ये न केवल उपयोगी होते हैं, बल्कि उपहार और सजावट के रूप में भी लोकप्रिय हैं।



आकर्षक बुकमार्क्स

जैविक ग्रीटिंग कार्ड्स

शुष्क पुष्पों और पत्तियों को आकर्षक रूप से ग्रीटिंग कार्ड पर सजाकर सुंदर, व्यक्तिगत और पर्यावरण-अनुकूल उपहार तैयार किए जाते हैं। इन कार्डों में प्रकृति की सादगी और हस्तकला की सुंदरता झलकती है। ये कार्ड न केवल शुभकामनाएं व्यक्त करते हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी देते हैं।

सजावटी फ्रेम

फ्लैट प्रेस किए हुए शुष्क पुष्पों को ग्लास फ्रेम में कलात्मक ढंग से सजाकर दीवारों या टेबल पर लगाया जाता है। ये फ्रेम प्राकृतिक सौंदर्य और हस्तकला का अनोखा संगम प्रस्तुत करते हैं तथा घर या कार्यालय की साज-सज्जा में आकर्षण प्रदान करते हैं।



सजावटी फ्रेम

खुशबूदार मोमबत्तियाँ

शुष्क पुष्पों को मोमबत्तियों में सजावटी रूप में शामिल किया जाता है। जब ये मोमबत्तियाँ जलती हैं, तो पुष्पों की हल्की-फुल्की प्राकृतिक खुशबू वातावरण को सुगंधित बना देती है। ये मोमबत्तियाँ सौंदर्य और सुगंध का सुंदर मेल हैं तथा उपहार के रूप में भी अत्यंत लोकप्रिय हैं।



संगंधीय मोमबत्ती

वॉल क्विल्ट

वॉल क्विल्ट एक सजावटी कपड़े की कलाकृति होती है, जिसे दीवार पर सजावट के रूप में लगाया जाता है। इसमें शुष्क पुष्पों, रेशमी धागों और पारंपरिक डिजाइनों

शुष्क पुष्पों का दैनिक जीवन में उपयोग

- **पंखुड़ियाँ:** गुलाब की पंखुड़ियों को सुखाकर तैयार किया जाता है। सूखी पंखुड़ियों का उपयोग ठंडे पेयों (शरबत आदि) और पोटपूरी में किया जाता है।
- **हर्बल फूलों की चाय:** गुलाब, लैवेंडर, कैमोमाइल जैसे फूलों को सुखाकर हर्बल चाय बनाई जाती है। यह चाय स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होती है। यह शरीर को आराम देती है और नींद में मदद करती है।
- **पोटपूरी:** सूखे फूलों, पत्तियों और सुगंधित तेलों से बना मिश्रण, जो कमरे को सजाने और खुशबू के लिए उपयोग किया जाता है।
- **कुक्कुट आहार:** गेंदे की सूखी पंखुड़ियों से निकाले गए जैथोफल को पोल्ट्री फीड में मिलाया जाता है, जिससे अंडों की जर्दी और ब्रॉयलर चिकन की त्वचा का पीला रंग अधिक गहरा होता है।

वैश्विक पुष्प बाजार में शीर्ष दस शुष्क सजावटी पौधे

शुष्क पुष्पों और पौधों की मांग विश्वभर में तेजी से बढ़ रही है। इनकी सुंदरता, स्थिरता और कलात्मक उपयोग ने इन्हें सजावटी उत्पादों के प्रमुख स्रोत के रूप में स्थापित किया है। वैश्विक स्तर पर निम्न दस शुष्क पौधे सर्वाधिक लोकप्रिय हैं-

- **हेलिक्रिसम-** चमकदार और लंबे समय तक टिकने वाले फूल, जिन्हें स्ट्रॉ फ्लावर भी कहा जाता है।
- **हेलिप्टरम-** कागज जैसे हल्के और रंग-बिरंगे शुष्क फूल, जो सजावट के लिए आदर्श हैं।
- **लिमोनियम-** विविध रंगों में उपलब्ध, ये फूल अपनी दीर्घायु के कारण विश्वभर में पसंद किए जाते हैं।
- **निजेला-** अनोखे आकार के बीज व पुष्पों वाला पौधा, शुष्क गुलदस्तों और सजावट में लोकप्रिय।
- **जिप्सोफिला-** छोटे-छोटे सफेद फूल, जिन्हें बेबी ब्रीथ के नाम से जाना जाता है, सौंदर्य व सौम्यता के प्रतीक माने जाते हैं।
- **डेलफिनियम-** ऊँचे, रंगीन पुष्पों की बालियाँ, जो शुष्क रूप में भी अत्यंत आकर्षक लगती हैं।
- **एमार्थस-** लटकने वाले पुष्पों की अनूठी बनावट के कारण यह सजावट में विशेष रूप से उपयोगी हैं।
- **पैपेवर-** खसखस (पोस्ता) के शुष्क फल अपने अद्भुत आकार के कारण सजावटी रूप में लोकप्रिय हैं।
- **कार्थेमस-** इसे सैफ्लावर कहा जाता है; सूखने के बाद भी इसकी पंखुड़ियाँ अपना चमकदार रंग बनाए रखती हैं।
- **गुलाब-** इसके शुष्क पुष्पों और पंखुड़ियों का उपयोग इत्र, सजावट और हस्तशिल्प निर्माण में व्यापक रूप से किया जाता है।

का कलात्मक संयोजन इसे विशिष्ट बनाता है। वॉल क्विल्ट न केवल एक आकर्षक सजावटी वस्तु है, बल्कि यह सांस्कृतिक विरासत और हस्तकला कौशल का प्रतीक भी मानी जाती है।

शुष्क पुष्पों का बुके (गुच्छ)

शुष्क पुष्पों से बना बुके आजकल इको-फ्रेंडली उपहार का नया ट्रेंड बन चुका है। इसे शुष्क पुष्पों से सजाकर तैयार किया जाता है, जो न केवल देखने में आकर्षक हैं बल्कि लंबे समय तक सजे रहते हैं। इनमें प्रायः गुलाब, लैवेंडर, जिप्सोफिला जैसे पुष्पों का प्रयोग किया जाता है, जो सूखने के बाद भी अपनी रंगत और सौंदर्य बनाए रखते हैं।

पुष्पों को सुखाने की विधियाँ

पुष्पों को सुखाना उनकी सुरक्षा और दीर्घायु सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक प्रक्रिया है। शुष्क फूल न केवल लंबे समय तक अपनी खूबसूरती और रंग बनाए रखते हैं, बल्कि इन्हें सजावट, हस्तशिल्प और औद्योगिक उपयोग में भी लिया जा सकता है। पुष्पों को सुखाने की कई विधियाँ हैं-कुछ पारंपरिक और सरल हैं, तो कुछ आधुनिक तकनीकें अधिक प्रभावी और टिकाऊ परिणाम देती हैं।

प्राकृतिक विधि

यह सबसे पुरानी और सरल विधि है। ताजे पुष्पों को गुच्छों में बांधकर उलटा लटकाया जाता है ताकि वे प्राकृतिक हवा में धीरे-धीरे सूख जाएँ। इस प्रक्रिया में पुष्पों के प्रकार और मोटाई के आधार पर लगभग 1 से 3 सप्ताह का समय लगता है। यह विधि लंबे और मजबूत पुष्पों के लिए उपयुक्त है।



पुष्पों को हवा में सुखाना

प्रेसिंग

इस तकनीक में पुष्पों को दो भारी किताबों के बीच या विशेष प्रेसिंग बॉक्स में दबाकर सुखाया जाता है। यह विधि पतले और छोटे पुष्पों के लिए बेहतर होती है। पुष्पों

की प्राकृतिक आकृति और रंग बरकरार रहते हुए, उन्हें लगभग 1-2 सप्ताह में सुखाया जा सकता है।

● सिलिका जेल से सुखाना

सिलिका जेल एक सूखा पदार्थ है जो पुष्पों से नमी तेजी से सोख लेता है। पुष्पों को सिलिका जेल वाले कंटेनर में डालकर ढक दिया जाता है और लगभग 2-3 दिनों के लिए रखा जाता है। इस विधि से फूल जल्दी सूख जाते हैं और उनका रंग और आकार बेहतर ढंग से बरकरार रहता है।

● ओवन द्वारा सुखाना

कम तापमान पर ओवन में पुष्पों को सुखाना एक तेज और प्रभावी प्रक्रिया है। पुष्पों को बेकिंग ट्रे पर रखकर 50-60°C तापमान पर लगभग 2-3 घंटे तक रखा जाता है। यह विधि पुष्पों को जल्दी सुखाने में सहायक होती है।



पुष्पों को सुखाने हेतु सिलिका जेल का प्रयोग

● माइक्रोवेव द्वारा सुखाना

माइक्रोवेव में पुष्पों को सुखाना सबसे तेज तरीका माना जाता है। अक्सर इसे सिलिका जेल के साथ किया जाता है। पुष्पों को सिलिका जेल में दबाकर माइक्रोवेव में 1-3 मिनट तक गर्म किया जाता है। इस विधि से फूल बहुत जल्दी सूख जाते हैं और उनका रंग और बनावट अच्छे ढंग से बने रहते हैं।

शुष्क पुष्पों का व्यवसाय न केवल

सौंदर्य और सजावट की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारत के निर्यात क्षेत्र में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करवा रहा है। यह क्षेत्र महिलाओं के लिए स्वरोजगार और सशक्तिकरण का एक अच्छा माध्यम बनता जा रहा है। भविष्य में पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता और प्राकृतिक सजावटी वस्तुओं की माँग के चलते शुष्क पुष्पों के व्यापार में और भी संभावनाएं हैं।

नवाचार

रिसाइकिल्ड सामग्री से तैयार सस्ता सौर ड्रायर

भारत के लघु किसान फलों, सब्जियों और मसालों की कटाई-उपरांत हानियों से जूझ रहे हैं। पारंपरिक धूप में सुखाने की विधि में उत्पाद धूल, कीट और असमान तापमान के कारण खराब हो जाते हैं, जबकि औद्योगिक ड्रायर महंगे और विद्युत निर्भर होते हैं। ऐसे में किसानों के लिए सस्ता, स्वच्छ और ऊर्जा-कुशल विकल्प आवश्यक हो जाता है।

इसी समस्या के समाधान के रूप में नगालैंड के जिला फेक के गाँव पोरबा के श्री सबयुविजो जुडो ने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध रिसाइकिल्ड सामग्री से एक अभिनव सौर ड्रायर तैयार किया है। लकड़ी, एल्युमीनियम कैन, बॉक्स और पुराने फैन



कम लागत से बना सौर ड्रायर

के पुर्जों से बना यह ड्रायर पूरी तरह सौर ऊर्जा पर आधारित है और इसके संचालन में किसी बाहरी ईंधन की आवश्यकता नहीं होती।

यह कीवी, लेदु, पर्सीमन, हल्दी और किंग मिर्च जैसी उच्च-मूल्य वाली फसलों को स्वच्छ, तेज और सुरक्षित ढंग से सुखाने में सक्षम है। इसका मॉड्यूलर डिजाइन विभिन्न फसलों और जलवायु परिस्थितियों के अनुसार अनुकूल है। कीमत मात्र ₹5,000-8,000 होने से यह औद्योगिक ड्रायर की तुलना में लगभग 90% सस्ता है। सुखाने का समय पारंपरिक विधि से 30% कम और लाभ-लागत अनुपात 2.8:1 है।

यह सौर ड्रायर वर्षभर उपयोग योग्य है, यहाँ तक कि मानसून में भी काम करता है। ग्रामीण, विशेषकर विद्युत विहीन क्षेत्रों के किसानों के लिए यह एक व्यावहारिक समाधान है जो ऊर्जा पर निर्भरता घटाकर उनकी आय बढ़ाने में मदद करता है। इस सौर ड्रायर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसे किसान स्वयं भी स्थानीय कारीगरों की मदद से तैयार कर सकते हैं, इसमें उपयोग होने वाली सभी सामग्री गाँवों में आसानी से मिल जाती है। इसकी संरचना हल्की है, इसलिए इसे खेत, आँगन या छत-कहीं भी लगाया जा सकता है। ड्रायर में वायु संचरण



विपणन हेतु तैयार प्रसंस्कृत शुष्क आलू

और ताप नियंत्रण की बुनियादी व्यवस्था है, जिससे सुखाने की गति बढ़ जाती है और उत्पाद में नमी समान रूप से कम होती है। इससे उपज का रंग, स्वाद और पोषण गुणवत्ता बेहतर बनी रहती है, और बाजार में अधिक दाम प्राप्त होता है। यह तकनीक कटाई-उपरांत हानि को कम करने के साथ भंडारण अवधि भी बढ़ाती है।

चूँकि इसका संचालन खर्च लगभग शून्य है, इसलिए यह प्रणाली लघु किसानों के लिए लंबे समय तक लाभदायक साबित होती है। इस प्रकार का नवाचार न केवल किसानों की आय बढ़ाता है, बल्कि स्थानीय संसाधनों के बेहतर उपयोग और सतत कृषि की दिशा में भी मजबूत कदम है।

(स्रोत: विकसित कृषि संकल्प अभियान संकलन)